Volume-3, Issue-8, August-2014 • ISSN No 2277 - 8160

Research Paper

Sanskrit

ऋषि वेदमन्त्रों के रचयिता हैं अथवा द्रष्टा?
(Rishi Vedmantro Ke Rachayita Hai Athava Drasta?)

Dr. Devesh Kumar Mishra

Assistent Professor 'Sanskrit', Assistent Director, Studies & Publication, Uttarakhand Open University, Haldwani - Nainital (Uttarakhand)

ABSTRACT

भारत में उपलब्ध अलौकिक ज्ञान कब भारत में आकर मनुष्य को आलोकित किया, वेदमन्त्रों का रचयिता कौन है? ऋषि ही इन मन्त्रों के वास्तविक प्रणेता हैं या जो भारतीय परम्परा मानती है कि वे द्रष्टा हैं, क्या यही सत्य है? इन प्रश्नों का समाधान असम्भव तो नहीं, कठिन अवश्य है।भारतीय परम्परा के अनुसार वेद मन्त्रों की रचना के सम्बन्ध में विचार किया गया है– परम्परा में वेद नित्य, शाश्वत, सनातन तथा अपौरूषेय हैं। मीमांसक इसके प्रबल पोषक हैं। मीमांसक मानते हैं कि जगत अनादि काल से चला आ रहा है, इसी तरह सदैव चलेगा न कभी इसकी सृष्टि हुई है और न तो कभी प्रलय होगी। वेदान्त दर्शन की मान्यता है कि वेद अनादि और अपौरूषेय ज्ञान हैं, प्रलय के पश्चात् भी वेद ब्रह्म में निहित रहते हैं। सृष्टि के आरम्भ में ईश्वर ऋषियों के ह्दय में वेद का प्रकाशन करता है।– मैक्समूलर, मैक्डानक, जैकोबी, आदि ने वेदों को नित्य नहीं माना और भाषा की प्राचीनता के आधार पर ऋग्वेद को सबसे प्राचीन मानकर उसका काल निधारित करने का प्रयास किया है।

KEYWORDS : अलौकिक, आलोकित ,ऐतिहासिक मीमांसक, पाश्चात्य, अपरिवर्तित ,अपौरूषेय ,शाश्वत।

प्रस्तावनाः– भारतीय मनीशा में उपलब्ध अलौकिक ज्ञान कब भारत में आकर आलोकित किया, वेदमन्त्रों का रचनाकार कौन है? ऋशि ही इन मन्त्रों के वास्तविक प्रणेता हैं या जो भारतीय परमपरा मानती है कि वे द्रश्टा हैं, क्या यही सत्य है? इन प्रष्नों का समाधान असम्भव तो नहीं, दुष्कर अवष्य है। इस सन्दर्भ में वेदों को अपोरूशेय तथा ईष्वर कृत मानने वाली भारतीय परम्परा है, इसके अलावा वेदों की रचना के विशय में जो भी मत प्रस्तुत किये गये हैं, वे अनुमान प्रणाली पर ही निर्भर हैं। वेद मन्त्रों की रचना के सम्बन्ध में दो प्रकार की विचारधाराएँ प्राप्त होती हैं। प्रथम तो यह कि प्राचीन भारतीय परम्परा, जो वेद को सनातन, षाष्वत और अपौरूशेय मानती है। द्वितीय यह कि ऐतिहासिक दृश्टि, भूगर्भ विद्या, ज्योतिश षास्त्र की दृश्टि से मानने वाले भारतीय और पाष्चात्य विद्वानों ने इसके लिए परिश्रम करके विभिन्न सिद्धान्त बनाये। वेदों के रचयिता ऋशि है या द्रश्टा? इसके उत्तर में विचारार्थ दो पक्षों की षरण ली जा सकती हैं।

प्रथम पक्षः– इस पक्ष में भारतीय परम्परा के अनुसार वेद मन्त्रों की रचना के सम्बन्ध में विचार किया गया है– परम्परा में वेद नित्य, षाष्वत, सनातन तथा अपौरूशेय हैं। मीमांसक इसके प्रबल पोशक हैं। मीमांसक मानते हैं कि जगत अनादि काल से चला आ रहा है, इसी तरह सदैव चलेगा न कभी इसकी सृश्टि हुई है और न तो कभी प्रलय होगी। किसी काल विषेश में जगत का निर्माण नहीं हुआ है उसी प्रकार किसी समय विषेश या किसी व्यक्ति विषेश द्वारा वैदिक वाङ्मय भी नहीं रचा गया। वेद वाङ्मय अनादि काल से है और यह गुरू–षिश्य परम्परा द्वारा अपरिवर्तित सुरक्षित रूप से चला आ रहा है। मीमासकों के लिए वेद इसी प्रकार अपौरूशेय हैं षाष्वत हैं।

उत्तर मीमांसक, वेदान्त के आचार्य भी वेद को अपौरूशेय ही मानते हैं। उनके अनुसार जगत् की सृश्टि–प्रलय हुआ करते हैं। सृश्टा जगदीष्वर हैं। वेदान्त दर्षन की मान्यता है कि वेद अनादि और अपौरूशेय ज्ञान हैं, प्रलय के पष्चात् भी वेद ब्रह्म में निहित रहते हैं। सृश्टि के आरम्भ में ईष्वर ऋशियों के ह्दय में वेद का प्रकाषन करता है। उसके पष्चात् गुरू षिश्य परम्परा से वेद लोक में प्रवर्तित होते हैं। प्रलय हो जाने पर वेद ज्ञान पुनः ब्रह्म में लीन हो जाता है।

नैयायिकों की मान्यता में भिन्नता पायी जाती है। नैयायिक मानते हैं कि प्रत्येक सावयव वस्तु कार्य होती है और प्रत्येक कार्य किसी न किसी कर्त्ता के द्वारा समय विषेश में निर्मित होता है। अतः वेद भी कार्य है, क्योंकि वह वर्ण षब्द व वाक्यों के योग से निर्मित होने के नाते सावयव है। इसलिए किसी कर्त्ता के द्वारा काल विषेश में निर्मित है। अतः वेद सादि व पौरूशेय है। इतना अवष्य है कि वेद अनन्त ज्ञान के भण्डार हैं अतः वे किसी अल्पज्ञ, बहुज्ञ लौकिक जीव की कृति नहीं हो सकते इस रूप में तो वेद को अपौरूशेय मानना पड़ेगा। यास्क ने भी बताया है–

''ऋषयो मन्त्र द्रश्टारः।'' वेदों के ईष्वरीय कृति होने में वैदिक वाङ्मय तथा उत्तरकत्तर्ी साहित्य में प्रमाण पाये जाते हैं, जैसे–

तस्माद् यज्ञात् सर्वहुतः ऋचः सामानि जज्ञिरे।
छन्दांसि जाज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत।।[1]
यस्मादृचो अपातक्षन् यजुर्यस्मादपाकशन्।
सामानि यस्य लोमान्य थर्वाङ्गिरसो मुखम्।।[2]

वेदों की उत्तति के बारे में ये मन्त्र स्पश्ट बोलते हैं कि वेद ईष्वर की कृति हैं। ऋक् यजुः साम इत्यादि सब उन्हे से उत्पन्न हुए हैं। ''वाचा विरूपचया नित्या''[3] इस श्रुति के आधार पर वाणी नित्य है और अनष्वर है। वेद के नित्यत्व और ईष्वरोत्पन्न होने में अन्य आप्त वचन इस प्रकार हैं–

यो ब्रह्माणं विदधाति पूर्वं यो वै वेदांष्च प्रहिणोति तस्मै।।[4]
अनादि निधना नित्या वागुत्सृश्टा स्वयम्भुवा।
आदौ वेदमयी दिव्या यतः सर्वाः प्रवृत्तयः।।[5]
अग्नि वायु रविभ्यस्त त्रयं ब्रह्म सनातनम्
दुदोह यज्ञ सिद्धयर्थमृग्यजुः सामलक्षणम्।।[6]

युगान्ते अन्तर्हितान् वेदान् सेतिहासान्महर्शयः।
लेभिरे तपसापूर्वमनुज्ञाताः स्वयम्भुवा।[7]
न कष्चित् वेदकर्त्ता स्याद् वेदस्मर्ता चतुर्मुखः।
वेदों नारायणः साक्षात् स्वयंभूरिति षुश्रुम।।[8]

अतः इन आप्त वाक्यों, वचनों के प्रमाण से वेद नित्य हैं, ईष्वर से उत्पन्न हैं, अनादि हैं, ब्रह्मा इनका स्मरण कर्त्ता है, ये सनातन व षाष्वत हैं। किन्तु इस प्रकार के मत को पाष्चात्य विद्वानों तथा उनकी पद्धति का अनुकरण करने वाले आधुनिक आलोचकों ने वेदों के नित्यत्व और अपौरूशेयत्व को स्वीकार नहीं किया इनके मतों का अध्ययन द्वितीय पक्ष में प्रस्तुत है–

द्वितीय पक्ष – मैक्समूलर, मैक्डानल , जैकोबी, आदि ने वेदों को नित्य नहीं माना और भाशा की प्राचीनता के आधार पर ऋगवेद को सबसे प्राचीन मानकर उसके काल निध्ंारिण का प्रयत्न किया है। आज के समय की ऐतिहासिक एवं वैज्ञानिक दृश्टि भारतीय पारम्परिक दृश्टिकोण को स्वीकार नहीं करती। उनका तड है–

प्रत्येक वाङ्मय में भावों या विचारों की अभिव्यक्ति अवष्य होती है जिनका सम्बन्ध किसी पुरूश से ही होता है। वेद इससे अछूते नहीं हैं। वेदों में ''वयं स्याम पतयो रयीणाम्''[9] अर्थात् हम धन सम्पत्तियों के स्वामी बनें तथा ''तस्मै वाताय हविशा विध्ेाम''[10] हम उस वात नामके देवता का हवि से यजन करें आदि अनेक उक्तियाँ हैं, जिनमें विभिन्न कामनाएँ प्रकट की गयी हैं। इसी तरह किसी देष काल विषेश से असम्बद्ध नित्य निर्लिप्त ईष्वर के लिए किसी देष विषेश की व्यास, षतलज आदि नदियों की चर्चा करना, ''षुनः षेपोयमहवद् गृभीतः''–[11] गृहीत हुए षुनः षेप ने जिसका आवाहन किया तथा ''चैद्यः कषुः षतमुश्टाणां ददत्'' चैद्य कषु ने 100 ऊँट दिये। ये सब तथ्य नितान्त असंगत प्रतीत होते हैं। इसके अतिरिक्त– यत्रा नः पूर्वे पितरः परेयुः अर्थात् जिस यम के पास हमारे पूर्व पितर गये हैं, यह भी असंगत है क्योंकि ईष्वर यदि रचयिता है वेदों का तो उसके पितर कैसे सम्भव हैं? अतः इस प्रकार के अनेक तथ्यों से वेदों का कर्त्ता ऋशि ही सिद्ध होता है। कालिदास ने ऋशियों को मन्त्र का कर्त्ता कहा – अप्यग्रणीर्मन्त्रकृतामृशीणां कुषाग्रबुद्धे कुषली गुरूस्ते।[12]'' इस सन्दर्भ में ऋग्वेद का ही एक मन्त्र द्रश्टव्य है–

ये च पूर्व ऋशयो ये च नूतना
इन्द्र ब्रह्माणि जनयन्तः विप्राः
अस्मे ते सन्तु सस्या षिवानि
यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः।।[13]

अर्थात हे इन्द्र जो ऋशि पूर्व में हो चुके हैं और जो नवीन हैं वे सब तुम्हारे लिए मन्त्रात्मक स्तोत्रों की रचना करते हैं। तुम्हारी मित्रता हमें मंगलकारी हो। तुम सदा हमारी रक्षा करो। इस प्रकार वेद मन्त्रों के कर्तृत्व के सम्बन्ध में और ऋशियों के द्रश्टा होने के सम्बन्ध में दोनों पक्षों में प्रमाण उपलब्ध होते हैं।

निश्कर्श :– उपर्युक्त इन तथ्य पूर्ण संक्षित विवेचनों से ऋशि का मन्त्र प्रणेता होना सहज ही सिद्ध हो जाता है। आधुनिक तार्किकों आलोचकों (पाष्चात्य एवं भारतीय) विचारकों का यही विष्वास है। इन सभी का यह मानना है कि प्रत्यक्ष प्रमाण के अभाव में वेदों का रचना काल और रचयिता का निर्धारण तो नहीं हो सकता किन्तु उपलब्ध प्रमाणों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि ऋशि मन्त्रद्रश्टा न होकर मन्त्रकर्त्ता हैं। किन्तु पारम्परिक विचार श्रेणी वेदों केा अनन्त ज्ञानराषि मानती है। ऐसा है भी, यदि ऋशि इनके कर्त्ता होते तो मन्त्रों की कोई निष्चित अर्थवत्ता होती। वेदों की यह विषेशता है कि वे सार्वदेषिक, सार्वकालिक अर्थ प्रदान करते हैं। ऋशिंदषनात् के अनुसार भी ऋशि द्रश्टा को ही कहेंगें, कर्त्ता को नहीं। आज भी अपनी–अपनी बुद्धि से लोग भिन्न–भिन्न अर्थ लगाते हैं। अतः यदि ऋशि इसका कर्त्ता होता तो वेदों को उसने क्या इतना जटिल रच दिया जो किसी के समझ में ही न आये ? क्योंकि भारतीय मनीशी वेदों के पृथक–पृथक प्रयोजन परक अर्थ ग्रहण करते हैं।

REFERENCES

1. ऋग्वेद 10/90/9 द्य 2. अथर्व 10/7/20 द्य 3.ऋग्वेद 8/64/6 द्य 4.श्वेताश्वतरोपनिषद् 6/18 द्य 5. ऐतरेय ब्राह्मण सायणभाष्य द्य 6.मनुस्मृति 1/23 द्य 7.ऐतरेय ब्राह्मण सायणभाष्य द्य 8.पराशर स्मृति द्य 9..ऋग्वेद 10/121/10 द्य 10...ऋग्वेद 10/168/4 द्य 11...ऋग्वेद 8/35/37 द्य 12.रघुवंश 5/4 द्य 13...ऋग्वेद 7/22/9